3 आर्थिक नियोजन के प्रकार व तकनीक
[TYPES AND TECHNIQUES OF ECONOMIC PLANNING]

देश के आर्थिक विकास में आर्थिक नियोजन को एक महत्वपूर्ण साधन एवं पद्धति माना गया है। नियोजन को किसी भी प्रकार की सरकार या अर्थव्यवस्था में बिना किसी कठिनाई के अपनाया जा सकता है। विश्व के विभिन्न राष्ट्र अपनी सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक दशाओं का ध्यान रखते हुए आर्थिक नियोजन पद्धति को अपनाते है। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि विकास हेतु नियोजन का होना आवश्यक है; भले ही इसका स्वरूप कुछ भी हो। **प्रो. एल. रॉबिन्स** के मतानुसार, "The issue is not between a plan and no plan, it is between different kinds of plans."

आर्थिक नियोजन को कई ढंग से विभिन्न वर्गों में विभाजित किया जाता है और इसके वर्गीकरण का कोई सर्वमान्य वैज्ञानिक आधार नहीं है। **प्रो. बेंजामिन हीगीन्स**[1] ने अपनी पुस्तक 'आर्थिक विकास' में नियोजन को मुख्यत: चार भागों में वर्गीकृत किया है—(1) **बाधा निवारक नियोजन** (Trouble Shooting Planning), (2) **युक्ति नियोजन** (Project Planning), (3) **क्षेत्रीय या खण्डगत नियोजन** (Sectoral Planning) तथा (4) **लक्ष्यगत नियोजन** (Target Planning)।

आर्थिक नियोजन : वर्गीकरण के आधार एवं प्रकार (Types and Bases of Classification of Economic Planning)

डॉ. तेला, मेहता एवं जैन ने आर्थिक नियोजन के वर्गीकरण के निम्नांकित आधार प्रस्तुत किये हैं—

(1) आर्थिक निर्णय के आधार पर

- आज्ञापूरक व प्रोत्साहन मूलक नियोजन।
- ऊपर से नियोजन एवं नीचे से नियोजन।
- केन्द्रित एवं विकेन्द्रित नियोजन।

(2) साधन के आधार पर

- भौतिक नियोजन।
- वित्तीय नियोजन।

(3) आर्थिक कार्य के आधार पर

- क्रियात्मक एवं संरचनात्मक नियोजन।
- क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय नियोजन।
- सामान्य एवं आंशिक नियोजन।
- सुधारवादी एवं विकासवादी नियोजन।

(4) संगठन की प्रकृति के आधार पर

- पूँजीवादी नियोजन।
- प्रजातान्त्रिक नियोजन।
- समाजवादी नियोजन।
- साम्यवादी नियोजन।
- तानाशाही नियोजन।
- गाँधीवादी नियोजन।

1 Benjamin Higgins, *Economic Development*, (1966) p. 636.

Scanned with CamScanner

(5) **अवधि के आधार पर**

- स्थायी एवं आपातकालीन नियोजन।
- अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन नियोजन।
- अनवरत योजना।

Scanned with CamScanner